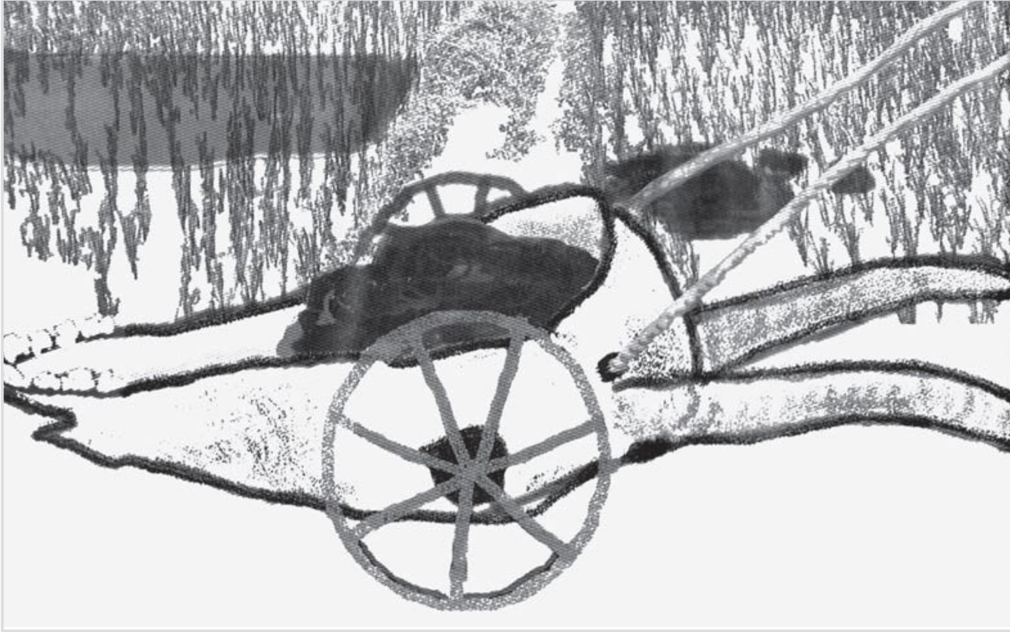
जातिगत असमानता का दर्पण है कहानी 'दिलेर बड़य्या'

माया मौर्य



यह कहानी मादिगो समुदाय के बारे में है। मादिगो समुदाय का मुख्य काम चमड़े से चप्पल बनाना है। कहानी जातिगत काम के प्रति लोगों का नज़रिया बयाँ करती है और दो जाति के लोगों के बीच के भेदभाव की तरफ़ इशारा करती है। कहानी पढ़ते हुए इस समुदाय के काम व रहन-सहन के बारे में भी पता चलता है। मादिगो समुदाय के लोगों का मुख्य काम चमड़ा निकालने और उससे चप्पल बनाने का है। वे ज़मींदारों के लिए भी चप्पल बनाते हैं लेकिन चप्पल बनाने में माहिर होने के बावजूद उन्हें ज़मींदारों के सामने चप्पल पहनने की अनुमति नहीं है। यदि ज़मींदार सामने आए तो उन्हें अपनी चप्पल निकालनी ही होगी और नंगे पैर ही रहना / चलना होगा।

इस कहानी का मुख्य पात्र है बड़य्या। वह एक मात्र लड़का है इस समुदाय का जो स्कूल जाता है। समुदाय के सभी लोग उसे पसन्द करते हैं, बड़े भी और बच्चे भी। उसे खिलौने बनाना अच्छा लगता है और वह हड्डियों के खिलौने बनाने में माहिर भी है। जब उसके पिता मरे हुए जानवर की खाल निकालते हैं तभी वह उस जानवर की हड्डियाँ चुन लेता है। और उन्हें सुखाकर अपने लिए खिलौने बनाता है, उसका सबसे प्यारा खिलौना है जानवर की खोपड़ी की गाड़ी। जिससे वह 'गाड़ी भरो' का खेल खेलता है।

जातिगत असमानता का दर्पण है ये कहानी

दिलेर बड़य्या की यह कहानी कक्षा के अन्दर, गलियारों में, मोहल्ले में हो रहे शोषण,

ऊँच-नीच के व्यवहार और जातिगत भेदभाव पर टिप्पणी करती है। मसलन, बड़य्या स्कूल जाता है लेकिन कक्षा में शिक्षक उसे सबसे पीछे ज़मीन पर बैठाते हैं। शिक्षक को लगता है कि बड़य्या बाक़ी विद्यार्थियों को अशुद्ध न कर दे। हालाँकि बड़य्या शिक्षक की बात ध्यान से सुनता है, गृहकार्य भी पूरा करता है और कक्षा में पाठ भी सुनाता है, लेकिन तब भी उसका कक्षा में स्थान आगे नहीं आ पाता। कहानी इस तरह के पक्षपात को दर्शाते हुए शिक्षक के रवैए पर चोट करती है और स्कूल व कक्षा के भीतर ऐसे बच्चों के साथ होने वाले बर्ताव पर सवाल उठाती है। ऐसा लगता है कि बड़य्या शिक्षक की भूमिका को आदर्श के रूप में देखता है। वह उसके व्यवहार से नाख़ुश है परन्तु पढ़ने की चाह के कारण स्कूल जाना जारी रखता है। शिक्षक का व्यवहार उसे हताश तो करता है, उसके बावजूद वह सीखना चाहता है। इसीलिए शायद, वह अपमान को भी झेलते हुए कक्षा में अपने-आप को समायोजित कर पाने की जद्दोजहद करता है।

कहानी का एक और अंश है जो और अधिक चुभता है और सवाल भी खड़े करता है, वह है बड़य्या जब अपनी माँ के साथ साँझ ढले लकड़ी बीनने जाता है। 'माँ और बड़य्या तुअर के खेत में लकड़ी बीन रहे होते हैं और तभी पटेल वहाँ आ जाता है, माँ को अपनी चप्पल उतारनी पड़ती है, लेकिन समय कम है, वह लकड़ी बीनने का काम जारी रखती है, कँटीली लताएँ उसके पैर में चुभती जाती हैं, और तब तुअर का एक लम्बा-सा ठूँठ उसके पैर में चाकू की तरह घुस जाता है, ख़ून बहने लगता है, माँ बड़य्या को पुकारती है।' बड़य्या माँ की हर सम्भव मदद करता है, उसे माँ के पैर की पीड़ा का पूरा भान है, और तभी वो सवाल जो उसे हमेशा कचोटता था, वह माँ से पूछता है 'पटेल के सामने आते ही तुम्हें अपनी चप्पल क्यों उतारनी पड़ती है?' सवाल जायज़ है, किसी ऐसी जगह पर जहाँ चप्पल पहनना ज़रूरी है, जहाँ पैर में काँटे चुभने का ख़तरा है वहाँ चप्पल उतारने का क्या तुक? शायद कोई भी समझदार इंसान किसी को यही राय देगा कि ऐसी जगह पर चप्पल पहनी जाए।

पहलू जो अच्छे लगे

भाषा शैली ऐसी है कि पढ़ते ही घटना का चित्र सामने आ जाता है। साथ ही बहुत-सी बातें कहानी में पढ़कर समझ में आती हैं, लेकिन कई अनकही बातें भी पढ़ते-पढ़ते ज़ेहन में आने लगती हैं। परिवार के लोगों का, समुदाय के लोगों का जुड़ाव इस कहानी में दिखता ही है। और यह भी महसूस होता है कि हर परिवार और समुदाय में बहुत कुछ शायद समान होता है। माता-पिता का बच्चों से प्यार और जुड़ाव, बच्चों का अपने आसपास के वातावरण से जुड़ाव और लगाव और उस माहौल में उनका सीखना, बच्चों के सटीक और सोचने को विवश कर देने वाले सवाल, बच्चों के खेल, उनकी बातचीत, वयस्कों के बारे में उनकी समझ सबकुछ इस कहानी में साफ़ झलकता है।

साथ-ही-साथ कहानी मादिगो समुदाय की चुनौतियों को भी प्रस्तुत करती है। चर्मकार समुदाय के परिवेश और उनके जीवन संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती है और उस समुदाय की बार-बार अवहेलना करने वाले पहलू दिखाती है। ख़ासकर, जब माँ को चोट लगती है उस दौरान माँ और बेटे की बातचीत काफ़ी कुछ कह जाती है। यह पाठक के लिए ऐसे सवाल भी छोड़ती है जो ऐसे भेदभाव पर सोचने के लिए विवश करते हैं।



चित्रों की भाषा

कहानी के चित्र काफ़ी निर्भीक हैं और बहुत कुछ बयाँ कर देते हैं। पहला चित्र इस समुदाय द्वारा किए जाने वाले काम की पृष्ठभूमि में बड़य्या और उसकी माँ का है।

चित्र समुदाय के काम और परिवेश को तो बताता ही है, साथ ही बड़य्या किस उम्र का लड़का होगा, उसका माँ के प्रति प्रेम आदि की छवि भी ज़ेहन में बनाता है। इस पहले चित्र में पूरे मोहल्ले में आदमी एक ही तरह का काम कर रहे हैं और बच्चे बाहर खेल रहे हैं। बहुत-से चित्रों में मरे हुए मवेशियों की हड्डियों से बनी हुई गाड़ी और दूसरे खिलौने हैं और उसी से बने औज़ार हैं। एक अन्य चित्र में मरी हुई गाय है जिसके अन्दर बच्चे बैठकर पढ़ रहे हैं। गाय का शरीर एक आउटलाइन की तरह दिख रहा है जिसके अन्दर बच्चे, उनकी पाठशाला और पढ़ाई-लिखाई सबकुछ है। यह प्रतीक है इस बात का कि समुदाय उन्हीं हालात में जीने को मजबूर है। उनकी शिक्षा और पूरा जीवन मरी हुई गाय के भीतर है। यह आउटलाइन बार-बार उनको उसी में धकेल रही है। इन चित्रों में जो रंग है वो हल्का गुलाबी (माँस के रंग का) है जो वहाँ की परिस्थिति और काम को बयाँ कर रहा है।

हड्डियों से बन्दूक, धनुष, हिरण जैसे कई खिलौने बने हैं। बच्चों के खेल-खिलौने और मनोरंजन सबकुछ मरे जानवरों की हड्डियों से है। एक दूसरा पहलू यह भी कि हड्डियों से भी तरह-तरह की कलाकृतियाँ बनाई जा सकती हैं। यह उन बच्चों की सृजनशीलता की झलक है।

बड़य्या अपनी माँ के लिए जो चप्पलें बनाता है वह किस तरीक़े से उसे काँटों से बचाती हैं, यह आख़िरी पेज में स्पष्ट है। काँटों के बीच पैर और चप्पल है। एक चित्र और है जिसमें ज़मींदार और दिलेर बड़य्या की माँ और कुत्ता है और बीचों बीच एक बड़ा-सा पैर है। इस पूरे पेज को लाल रंग दिया गया है जो ख़ून के साथ-साथ प्रतिरोध को भी प्रदर्शित कर रहा है। मिट्टी, खेत, गन्दगी, कचरा और मरे जानवरों के अवशेष वाले माहौल को दिखाने के लिए मटमैले-धूसर रंग का इस्तेमाल किया गया है। कोई भी चेहरा नैन-नक़्श के साथ नहीं बनाया गया है जो यह इशारा करता है कि ये कोई भी हो सकता है।

बतौर पाठक मेरा अनुभव

इस कहानी को पढ़कर "खिलौनेवाला घोड़ा" कहानी याद आती है जिसमें बच्चे अपने परिवेश के अनुसार अपने खिलौने ख़ुद ही गढ़

लेते हैं। जैसे इस कहानी में बच्चे जानवरों की खोपड़ी से खिलौने बनाते हैं।

अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने जैसे छोटे-छोटे बीज बचपन से उसकी माँ उसमें बो रही थी। उसकी माँ का एक कथन है, "हमें अगर ज़मींदार से लड़ना है तो जाति, ताक़त और ज़मीन चाहिए होगी। यदि ताक़त और ज़मीन नहीं है तो हमें जातिगत भेदभाव को ख़त्म करना पड़ेगा", यह काफ़ी प्रभावित करता है और पूरी सामाजिक व्यवस्था की असलियत खोलकर रखता है। वह यही चाहती थी कि सारे मादिगो समुदाय को एकजुट होना पड़ेगा और जाति व्यवस्था ख़त्म होनी चाहिए। वह यह उम्मीद जगाती है कि ज़मींदार लोग जैसा चाहते हैं हम मादिगो जाति के लोग वैसा ही करते रहें, यह ज़्यादा दिन तक नहीं चलेगा।

जिस तरीक़े से बड़य्या ने अपनी माँ के लिए चप्पलें बनाईं और उन्हें पहनने के लिए मजबूर किया, यह समाज में बदलाव लाने की ओर आगे बढ़ रहा है। उसकी माँ गाँव में सभी को अपने बेटे की क़ाबिलियत के बारे में बताती है कि उसका बेटा अपने पिता के समान ही चप्पल बनाने में माहिर है। इसके आगे कहानी कुछ और भी कहना चाहती है पर माँ के माध्यम से अपनी जाति की ख़ासियत व हुनर बताकर रह जाती है।

कहानी थोड़ी चुभ रही है। ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि बड़य्या अपनी माँ के लिए चप्पलें बनाता है और पहनाता भी है, लेकिन ज़मींदार के सामने चप्पल पहनकर माँ को जाते हुए कहानी में नहीं दिखाया जाता। मैं सोचती हूँ कि अगर वह वापस ज़मींदार के सामने चप्पल पहनकर जाती तो ज़मींदारों को एक गहरी चोट लगती। लेकिन इस हिस्से को नहीं लिखा गया है। एक पाठक के तौर पर मुझे ऐसा लग रहा है कि क्या इस हिस्से को छुपा दिया गया है? मुझे कहानी से इससे आगे की उम्मीद थी।

यह कहानी एक ऐसे समुदाय की है जिसके बारे में कम ही जानने को मिलता है और बच्चों की किताबों में शायद ही ऐसी कहानियाँ शुमार हों। लेखक बचपन से बड़े होने तक की कहानी, जैसे– खेल का जुगाड़, स्कूल में भेदभाव आदि को केन्द्र में रखते हैं। लड़के-लड़की के बीच भेदभाव को भी उजागर किया गया है। समाज में हाशियाकृत वर्ग में होते हुए भी वे अपने आत्मसम्मान को बनाए रखते हैं और अपनी ताक़त का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

किताब का नाम : फिर जीत गई ताटकी और दिलेर बड़य्या, **कहानी का नाम :** दिलेर बड़य्या, **मूल तेलुगु कहानी :** गोगु श्यामला
अँग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद : सुशील जोशी, **चित्रांकन :** पूजा वैश, **प्रकाशक :** एकलव्य, **मूल्य :** ₹110

माया मौर्य पिछले 15 साल से मुस्कान संस्था, भोपाल के साथ एक शिक्षिका के रूप में कार्य कर रही हैं। वे बस्ती सेंटर पर कामकाजी और स्कूल ड्रॉपआउट बच्चों को खेल-खेल में मनोरंजक तरीक़े से सीखने-सिखाने का कार्य करती हैं। उन्हें बच्चों के बीच रहने और उन्हें पढ़ाने में ख़ुशी मिलती है व बच्चों से बहुत कुछ सीखती हैं। उन्हें किताबें पढ़ने में रुचि है। माया मौर्य वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ॉउण्डेशन मध्यप्रदेश के भोपाल में कार्यरत है।

सम्पर्क : mayasom@gmail.com